

गुनगुनी की तान

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

ISBN: 978-81-23010-01-1

पुस्तक का नाम

गुनगुनी की तान

लेखक

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

प्रकाशक:

संकल्प प्रकाशन

वर्ष 2012

मुद्रक:

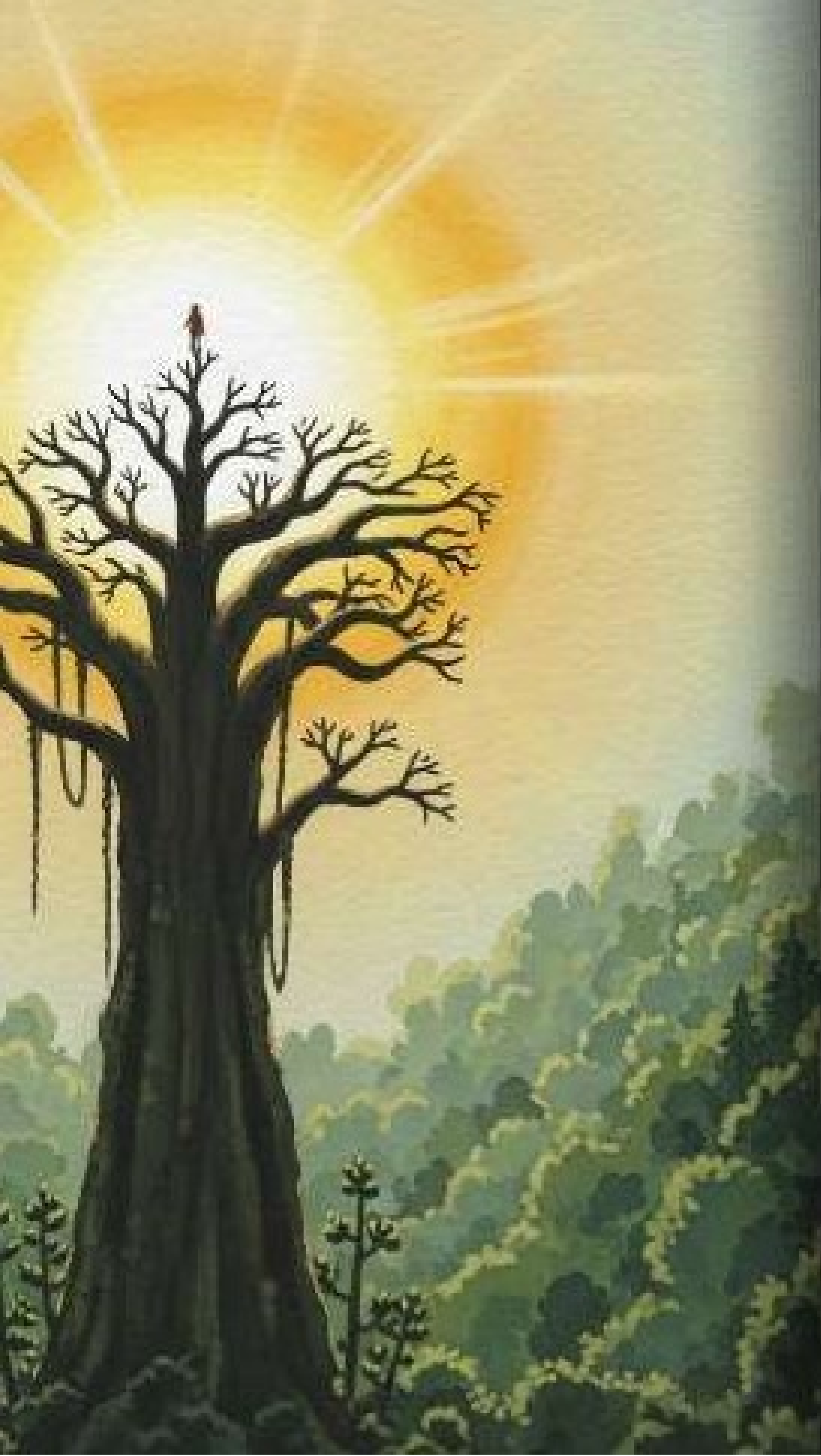
साक्षी ऑफसेट, कानपुर

GUNGUNI KI TAAN

By: Dr. Suresh Kumar Mishra 'Uratript' Price: 60/-



एक बड़े से पीपल के पेड़ पर गुनगुन नाम की एक छोटी चिड़िया रहती थी। उसका दिल बहुत मीठा था, पर उसकी आवाज़ हमेशा धीमी रहती थी।



पीपल के सबसे ऊपरी सिरे पर, जहाँ से पूरा जंगल दिखता था, चिड़ियाएँ रोज़ सुबह अपनी 'सबसे ऊँची तान' गाने की कोशिश करती थीं।



गुनगुन को भी उस ऊँची तान को गाना था,
पर जैसे ही वह कोशिश करती, उसकी
आवाज़ एक छोटी-सी फुसफुसाहट में
बदल जाती।



एक दिन उसने पास की शाखा पर बैठे धीर अंकल को देखा। धीर अंकल सबसे पुराने और सबसे समझदार पक्षी थे।



गुनगुन ने हिम्मत करके पूछा, "धीर अंकल, मैं अपनी आवाज़ को ऊँची तान तक कैसे पहुँचाऊँ? मुझे डर लगता है कि मैं गिर जाऊँगी।"



धीर अंकल मुस्कुराए। उन्होंने कहा, "गुनगुन, सबसे ऊँची तान पेड़ की ऊँचाई में नहीं है। वह तो तुम्हारे दिल की सच्चाई में है।"



"लेकिन जब मैं ऊँचाई की तरफ देखती हूँ, तो मुझे चक्कर आने लगता है," गुनगुन ने धीमी आवाज़ में कहा।



धीर अंकल ने गुनगुन को एक छोटा, गोल बीज दिया। "इसे निगल लो। यह तुम्हें पंखों की शक्ति नहीं देगा, पर तुम्हें यह याद दिलाएगा कि तुम पहले से ही उड़ सकती हो।"



गुनगुन ने बीज को निगला, फिर उसने आँखें बंद कर लीं। उसने पेड़ की ऊँचाई को नहीं, बल्कि अपने अंदर की धुन को महसूस किया।



और फिर, उसने गाया! वह तान सबसे
ऊँची नहीं थी, पर वह सबसे सच्ची थी। पूरा
जंगल उस प्यारी, मीठी धुन से भर गया।
गुनगुन ने अपनी आवाज़ ढूंढ ली थी।